RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारतीय उप–महाद्वीप में बौद्ध अध्ययन के स्रोत

पूरन लाल मीना

असिस्टेंट प्रोफेसर दिल्ली विश्वविधियालय

वैसे तो बौद्ध–अध्ययन के स्रोत हमें भगवान बुद्ध के समय से ही मिलने लग जाते हैं जिन्हें सामान्यतः 5वीं और 6वीं शताब्दी से ही विभिन्न रूपों में विभिन्न भाषाओं में देखा जा सकता है।[1] इस बौद्ध अध्ययन सामग्री का महत्व बौद्ध स्रोत के साथ–साथ साहित्य के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[2] यही साहित्य हमें बौद्ध धर्म की उत्पत्ति और पतन की एक श्रृंखला बनाने में हमारी सहायता करता है। ये साहित्य पुरातात्विक बौद्ध स्थलों को पुनः उत्खनन करने में हमारी सहायता एक अंधेरे में प्रकाश की रोशनी के रूप में करता है। सबसे पहले साहित्यिक स्रोतों का विश्लेषण करें तो बौद्ध धर्म की विचारधारा का एक विशिष्ट रूप सामने आता है। इस साहित्य में दो विचारधाराएँ निकल कर आती है पहली धर्म वैधानिक और दूसरा गेर धर्म वैधानिक[3] ये दोनों विचारधाराएँ बौद्ध धर्म के आचरण को अपनाने के मार्ग पर अलग–अलग रूपों में ज्ञान को विभक्त करती है। धर्म वैधानिक साहित्य की विचारधारा 12 अंग, 3 पिटको में संकलित है। पालि साहित्य में थेरावाद बौद्ध धर्म की शाखा पुरातन मानी जाती है। परंपरागत रूप से इस बौद्ध साहित्य को तीन भागों में विभक्त किया जाता है जिसे संयुक्त रूप में त्रिपिटक बौद्ध साहित्य का नाम दिया जाता है।[4]

इसी त्रिपिटक बौद्ध साहित्य का पहला भाग है सूत्र, जो कि भगवान बुद्ध के जीवन तथा भगवान बुद्ध के उपदेशों से सम्बन्धित संकलन है। त्रिपिटक का दूसरा भाग है विनय, जिसमें बौद्ध मढीय जीवनयापन का विस्तार से वर्णन है। इसी त्रिपिटक के तीसरा और अंतिम भाग है अभिधम्म, जिसमें पूर्व साहित्य और उसका विश्लेषण वर्णित है।[5]

इसमें कोई सन्देह नहीं कि बौद्ध धर्म की थेरावाद शाखा में पालि ग्रंथ त्रिपिटक सबसे पुरातन ग्रंथ है। पालि बौद्ध धर्मग्रन्थ त्रिपिटक के तीन भागों में से पहला भाग सुत्त को पाँच भागों में विभक्त किया गया है जिन्हें निकाय के नाम से जाना जाता है– ये हैं– दीर्घ निकाय, मज्जिम निकाय, समयुत्त निकाय, अगुत्तर निकाय, खुद्दक निकाय! आगे चलक निकाय भी दो भागों में विभक्त हो जाते हैं– थेरी गाथा और थेरागाथा जो कि बौद्ध भिक्षुणियों और बौद्ध भिक्षुओं के लिए गीतों का संकलन थे।[6]

थेरीगाथा ज्यादा महत्वपूर्ण था क्योंकि प्राचीन भारत में बौद्ध महिलाओं के लिए समर्पित ग्रन्थों में से ये एक इसी तरह का ग्रन्थ था, जिसमें बौद्ध धर्म का पालन करने वाली बौद्ध भिक्षुणियों के आचरण उन्हें बौद्ध मठों में होने वाले बौद्ध क्रियाकलापों में किस स्तर पर किसके साथ कब–कब भाग लेना है तथा दैनिक मठीय जीवन चर्या में उनको आने वाली परेशानियों तथा उनके निवारण के मार्ग थेरी गाथा जो कि पालि त्रिपिटक के सुत्त विभाग की दो शाखाओं में से एक महत्वपूर्ण शाखा है। महिलाओं को समर्पित होने के कारण ये और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि आनंद जो कि भगवान बुद्ध के प्रिय शिष्य थे के कहने पर ही महिलाओं को बौद्ध धर्म में दीक्षा लेने की अनुमति मिली थी। पर उनके आचरण, विचरण के लिए नियम भगवान बुद्ध के जीवित रहते वन नहीं पाये इस कमी को बाद में भगवान बुद्ध के शिष्यों ने थेरीगाथा ग्रन्थ संकलित कर पूरा कर दिया। वैसे महिलाओं पर कुछ श्लोक वेदों में आते रहे हैं, और कई विदूषियाँ भी वेदों के समय प्रसिद्ध रही थी जैसे उपाला, घोषा, गायत्री इत्यादि।

भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के कुछ वर्षों बाद प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन राजगीर में शासक अजातशत्रु के समय आयोजन किया गया था और इसी बौद्ध संगीति में विनय और सुत्त को संकलित किया गया। माना जाता है कि 100 वर्ष बाद वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ तथा तीसरी बौद्ध संगीति पाटलिपुत्र में 3वीं शताब्दी पूर्व में और चौथी बौद्ध संगीति कुन्दलवन (कश्मीर) में आयोजित हुई कुषाण शासक कनिष्क के समय चौथी बौद्ध संगीति शालीमर वांग के पास स्थित हरवान गार्डन में कुण्डलवन में संम्पन हुई।

इण्डो–ग्रीक शासक मिलिंद और बौद्ध भिखु नागसेन के बीच दार्शनिक बौद्ध मतों पर संवाद, चर्चा हुई थी इसका वर्णन गैर–वैधानिक बौद्ध मिलिंदपन्हा में वर्णित है।

बुद्ध भगवान के उपदेशों का वर्णन नेत्तीप्रकरण में वर्णित है 5वीं शताब्दी में बुद्धघोष नामक महान विद्वान के पाली त्रिपिटकों पर टीकाएँ भी नेत्तीप्रकरण नामक पालिग्रन्थ में वर्णित हैं ऐतिहासिक और बुद्ध की कल्पित कथा की कहानियों के साथ–साथ बौद्ध धर्म के श्रीलंका में प्रसार की ऐतिहासिकता का वर्णन भी मिलता है।

[1]वी.सी. लॉ, ज्योग्राफी ऑफ अर्ली बुद्धिज्म, 2008, पृ. 2
[2]वही, पेज–2
[3]वी.सी. लॉ, ए हिस्ट्री ऑफ पालि साहित्य वोलम–1, लंदन, 1933, पृ. 43
[4]उपेन्द्र सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पाषाणकाल से 12वीं शताब्दी तक दिल्ली, 2008, पृ. 23
[5]वी.सी. लॉ, पूर्वोक्त, वर्ष 1933, लंदन, पृ. 303
[6]उपिन्दर सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 324

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पाली बौद्ध धर्मग्रन्थों के साथ–साथ हमें संस्कृत में लिखे बौद्ध ग्रन्थ भी मिलते हैं सर्वस्तीवाद जो कि बौद्ध की ही एक शाखा है में संस्कृत भाषा बौद्ध ग्रंथों के संकलन के लिए उपयोग में लायी गई, महावस्तु बौद्धग्रन्थ पर तो महायान शाखा का ही प्रभाव है क्योंकि महायान बौद्ध धर्म की शाखा ने संस्कृत को अपना लिया था पर महायान शाखा की संस्कृत प्राकृत भाषा का मिश्रण थी। ललितविस्तार में जो कि प्रथम से द्वितीय शदी के समय रचित है में भगवान बुद्ध की जीवन कथा का वर्णन है इसे हेजियोग्राफी के नाम से भी जाना जाता है प्राकृत–संस्कृत मिश्रण की भाषा इसकी विशेषता रही है। ये महायान बौद्ध धर्म की शाखा से प्रभावित है इसी प्रकार बुद्धचरित्र जिसके लेखक अश्वघोष को माना जाता है संस्कृत भाषा में लिखा गया बौद्ध धर्म ग्रन्थ है इसे भी प्रथम से द्वितीय शदी में लिखा गया था। अवदान बौद्ध कथा जिन्हें दूसरी सदी में लिखा गया दिव्यावदान जिसे चौथी सदी में लिखा गया इनमें भगवान बुद्ध तथा मौर्य सम्राट अशोक की बातें संकलित है अष्टसहक्षिका, सदधर्म पुण्डरीक प्रज्ञापाटामिता में बौद्ध धर्म की महायान शाखा के सिद्धान्त विस्तार से वर्णित हैं महायान शाखा के अन्य संस्कृत विद्वानों में प्रमुखतः असंग, नागार्जुन, आर्यदेव, बसुबन्धु, दिगनाग, बुद्धपालित प्रमुखतः है। महायान बौद्ध धर्म की शाखा ने अपने आप को बड़ी नाव के रूप में प्रदर्शित करने का प्रयास किया था जबकि बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा ने छोटी नाब अर्थात् जो सिर्फ अपने उद्धार की बात करते हो दूसरों के उद्धार की नहीं, इसी अर्थ के कारण इन्हें हीन यानी कहा गया इनका मानना था कि व्यक्ति की अपनी स्वयं की मुक्ति की कामना करनी चाहिए अपने लिए प्रयास करना चाहिए न कि दूसरों की मुक्ति की। क्योंकि मुक्ति जब स्वयं कर लेगा भक्त तो उसका अनुकरण अन्य द्वारा भी किया जायेगा और यह परंपरा एक मार्ग एक तरीका बन जायेगा मुक्ति का पापों से छुटकारा पाने का, भवसागर से पार जाने का अर्थात् मोक्ष प्राप्त करने का यही रास्ता श्रेष्ठ है।

महायानियों ने इसके अलग अपने आपको आधुनिक अर्थात् मोडर्न बनाया और उस समय के अन्य विद्वानों की श्रेष्ठ भाषा संस्कृत को अपने धर्मग्रन्थों को लिखने के लिए अपनाया क्योंकि महायानियों का मानना था कि बौद्ध भक्त को सिर्फ अपनी ही नहीं बक्कि सबकी मुक्ति अर्थात् सर्वमुक्ति के रास्ते को अपनाना चाहिए इससे संसार दुःखों से मुक्त हो जायेगा अर्थात् सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण की बातें महायानियों के दर्शन, संस्कृत भाषा में समाहित थे।

ये जितने भी बौद्ध धर्म ग्रंथ लिखे गये हैं। इन प्राचीन ग्रंथों को लिखने में राजकीय संरक्षण का विशेष योगदान रहा है। मगध शासक अजातशत्रु जिसके समय में प्रथम बौद्ध संगीति राजगीर में आयोजित हुई थी बौद्ध ग्रंथों में बुद्ध भगवान के मगध शासक अजातशत्रु से मुलाकात करना बहुत ही ऐतिहासिक घटना माना जाता है। इसे भरहुत स्तूप के पश्चिमी गेट के रेलिंग स्तंभ पर अवस्थित किया गया है जो आज मध्य–भारत में स्थित है–

इसी के पास प्राकृत भाषा का एक अभिलेख भी है जिस पर प्राकृत मिश्रण में ''अजातशत्रु भगवतो वन्दते'' लिखा है जिसका अर्थ है कि भगवान बुद्ध की अजातशत्रु वंदना अर्थात् प्रार्थना कर रहे हैं।[7]

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों के बारे में एक समस्या है कि मूल ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है और जिन लेखकों ने बौद्ध विद्वानों ने चाहे वे पाली के ज्ञाता, लेखक हो या प्राकृत के ज्ञाता या लेखक हो या फिर संस्कृत के महायानी बौद्ध शाखा के लेखक हो सबने कोट किया है किसी बौद्ध ग्रंथ को, पर जिस मूल ग्रंथ को कोटेट किया गया है उसकी मूल प्रति आज तक कहीं उपलब्ध नहीं है। हो सकता कि भारतीय उप–महाद्वीप में विदेशी आक्रांताओं की एक लम्बी श्रृंखला है इसलिए भिन्न–भिन्न आक्रांताओं के भिन्न–भिन्न नजरिये रहे होंगे इन भारतीय ग्रंथों के प्रति यह सर्वविदित है कि स्वयं मुस्लिम विद्वान जो उस समय आक्रांताओं के साथ भारत आये उन्होंने इसका आँखों देखा विवरण लिखा भी है कि शुरूआती विदेशी सुल्तानों ने भारतीय उप–महाद्वीप की संस्कृति धर्म, ग्रन्थों की कोई कद्र नहीं की और बहुतों को पानी गरम करने के लिए जलाते रहे।

ऐसी बहुत सी पाण्डुलिपियाँ (मेन्युस्क्रिप्ट) शास्त्रों (स्क्रिटचर्य) को नष्ट कर दिया जिसमें बहुमूल्य बौद्ध ज्ञान संचित था।

जैसे ही बौद्ध धर्म के खराब दिन भारतीय उपमहाद्वीप में शुरू हुए उसी के साथ बौद्ध पाण्डुलिपियाँ शास्त्र नष्ट होने शुरू हो गये। एक अन्य कारण यह भी रहा था कि भगवान बुद्ध के रहने तक ज्ञान उपदेश, प्रवचन मौखिक होते थे उनको लिपि बद्ध रखा नहीं जाता था इसलिए बाद में लेखन करते समय उस ज्ञान में अन्तर आता गया।

एक अन्य महत्वपूर्ण विचार जिसमें से एक कारण यह रहा होगा कि जब शुरूआती बौद्ध धर्म गंगा के मैदानी भागों में फैल रहा था उस समय के ग्रंथ श्रीलंका से कैसे मिल रहे हैं। अर्थात् बौद्ध धर्म गंगा तटीय भागों में प्रसार–प्रचार कर रहा था ठीक उसी समय की बातों का जिक्र श्रीलंका से प्राप्त बौद्ध ग्रन्थों में मिल रहा है। और ये ग्रंथ 5वीं शताब्दी के है। इन्हीं बातों का जिक्र चीनी ग्रंथों में अर्थात् बौद्धों के चीन में उपलब्ध ग्रंथों में और तिब्बत के 7वीं शताब्दी के ग्रंथों में तथा संस्कृत के 5वीं शताब्दी के ग्रंथों मे इन संदर्भों का उल्लेख आया है। बहुत से स्वतंत्र ग्रन्थ श्रीलंका, मध्य एशिया, चीन, तिब्बत में उपलब्ध है जो तत्कालीन पाली ग्रन्थों को संदर्भ के रूप दर्शाते हैं।

शिलालेख, अभिलेख बौद्ध इतिहास के महत्वपूर्ण अन्य स्रोत रहे हैं ये शिलालेख पाली भाषा में, खरोष्ठी भाषा में अरामाईक भाषा में, ग्रीक, तथा प्राकृत और ब्रह्मी भाषा में मिले

[7]उपिन्दर सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 287

हैं।[8]

इन सब शिलालेखों में बौद्ध इतिहास का सबसे अच्छा उदाहरण मौर्य सम्राट अशोक के शिलालेख जिसमें मौर्य सम्राट अशोक स्वयं घोषणा करते हैं कि बौद्ध धर्म के तीन रतन अर्थात् बुद्ध, धम्म, संघ में उसकी आस्था है और बौद्ध धर्म को नुकसान पहुँचाने वाले कवाईलियों, चोरों, बहेहिलयों, जनजातियों, नट्टारों, जंगली खुंखार, लुटेरों को सम्राट अशोक कड़ी सजा देगा अर्थात् मौर्य सम्राट अशोक नहीं चाहते कि कोई बौद्ध धर्म और उसके भिक्षु–भिक्षुणियों को चोट पहुँचाये। ये शिलालेख अब बेराढ से कोलकाटा (कलकत्ता) में स्थानान्तरित कर दिया गया है और इसका नया नाम वेराठ–कोलकत्ता शिलालेख रखा गया है। ये हमारे लिए पुरातात्विक स्रोत है।[9]

इस प्रकार पालि स्रोत के साथ–साथ तिब्बती श्रीलंकाई, चीनी, मध्य ऐशियाई बौद्ध स्रोत उपलब्ध है।

[8]उपिन्दर सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 374

[9]देवहूति , अशोकस डेसेन्ट फ्रॉम द हिन्दू एंड द बुद्धिस्ट गोआल एंड मेथड्स ऑफ चक्रवर्ती , द ग्रेट कनक्वेरोर इन एस.सी . मालिक (एडिटेड)डिस्सेंट , प्रोटेस्ट , एंड रिफार्म इन इंडियन सिविलाइजेशन , शिमला ,1977 .

RRIJM 2015, All Rights Reserved